पाठ - २ मेरे संग की औरतें

शब्दार्थ :-

परदानशी	परदा करने वाली स्त्री
१. मुँहज़ोर	बहुत बोलने वाली
२. फरमाबरदार	आज्ञाकारी
३. बाशिंदों	रहने वाले
४. अभिभूत	प्रभावित
५. नाज़ुक	कोमल
६. मुस्तैद	तैयार
७. गोपनीय	गुप्त
८. फ़ज़ल	अनुग्रह , दया
९. अपरिग्रह	संग्रह न करना
१०. पोशीदा	गोपनीय
११. बदस्तूर	नियम से
१२. मर्तबा	समय
१३. आरज़ू	चाहत
१४. गुमान	पता
१५. वाजिब	जरूरी
१६. अकबकाया	घबराया
१७ ब्रदर्स	इसके लेखक प्रसिद्ध रूसी
१८ कारामजोव	उपन्यासकार दास्तोवस्की हैं।
मिराक	मानसिक रोग
१९	

20	मोहलत	फुर्सत , अवकाश
21	लीक	लकीर
22	फ़ारिग	कार्य से निवृत्त
23	खरामा - खरामा	धीरे - धीरे
24	शागिर्दों	छात्रों
25	इसरार	आग्रह
26	माकूल	मुनासिब

प्र० / 30 :-

1. लेखिका ने अपनी नानी को कभी देखा भी नहीं फिर भी उनके व्यक्तित्व से वे क्यों प्रभावित थीं ?

30 - लेखिका ने अपनी नानी को कभी देखा भी नहीं फिर भी वह उनके व्यक्तित्व से इसलिए प्रभावित थी क्योंकि वे एक पारंपरिक अनपढ़ और परदानशीं औरत थी , उन्होंने कभी अपने पति के विलायती रीति - रिवाज का प्रभाव अपने रहन - सहन पर नहीं पड़ने दिया , वे भले ही अपनी आजादी से पूरी तरह बेखबर थी परंतु उनके मन में देश की आज़ादी के लिए जुनून था ।

2. लेखिका की नानी की आजादी के आंदोलन में किस प्रकार की भागीदारी रही ?

PAGE NO.:
DATE: / /

उ०- लेखिका की नानी देश को आजादी दिलाने का जुनून रखती थी, पर वह कभी आजादी की भागीदारी सामने आकर नहीं बनी किंतु आजादी के प्रति अपनी भागीदारी उन्होंने अपनी इकलौती बेटी को एक आज़ादी के सिपाही के साथ विवाहित करके पूरी कर दी।

(क) लेखिका की माँ के व्यक्तित्व की विशेषताएँ लिखिए
उ०- लेखिका की माँ के व्यक्तित्व की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं :-

1. वह कभी झूठ नहीं बोलती थी जिस कारण उन्हें घरवालों का आदर मिला हुआ था।
2. वे एक की गोपनीय बात दूसरे को नहीं बताती थी जिस कारण उन्हें बाहरवालों की दोस्ती मिली हुई थी।
3. उनका अधिकांश समय संगीत व अध्ययन को समर्पित था।

(ख) लेखिका की दादी के घर का शब्द-चित्र अंकित कीजिए।
उ०- लेखिका की दादी के घर में कुछ लोगों को अंग्रेज तो कुछ को भारतीय नेता पसंद थे, परंतु इस मामले में कभी लड़ाई नहीं हुई थी, कोई किसी काम के लिए दबाव नहीं डालता था।

सब स्वतंत्रता से जीते थे व बच्चों की जिम्मेदारी भी सब उठा लेते थे।

4. आप अपनी कल्पना से लिखिए कि परदादी ने पतोहू के लिए पहले बच्चे के रूप में लड़की पैदा होने की मन्नत क्यों माँगी?

उ०- उस समय लोगों की मनोवृत्ति यह थी कि वह लड़कियों को लड़कों से कम आँका करते थे और ज्यादातर लोग लड़के होने की ही माँग करते थे। कुछ लोग तो लड़कियों को इतना बोझ समझते थे कि उनके पैदा होते ही उन्हें मार दिया जाता था किंतु परदादी हमेशा लीक से हटकर काम करती थी। जो सदियों से चला आ रहा उससे हमेशा हटके, शायद तभी परदादी ने पतोहू के लिए पहले बच्चे के रूप में लड़की पैदा होने की मन्नत माँगी।

5. डराने - धमकाने - उत्तर दीजिए।

उ०- इस पाठ से स्पष्ट है कि मनुष्य के पास सबसे प्रभावी ~~अस्~~ अस्त्र है - अपना दृढ़ विश्वास और सहज व्यवहार। यदि कोई सगा - संबंधी गलत राह पर हो तो उसे डराने - धमकाने, उपदेश देने या दबाव डालने की जगह

PAGE NO.:
DATE: / /

सहजता से व्यवहार करना चाहिए। लेखिका की नानी ने भी यही किया। उन्होंने अपने पति की अंग्रेज़-भक्ति का न तो मुखर विरोध किया, न समर्थन किया, वे जीवन भर अपने आदर्शों पर टिकी रहीं। परिणामस्वरूप अवसर आने पर वह मनवांछित कार्य कर सकीं। लेखिका की माता की दादी यानि उनकी परदादी ने चोर के साथ जो व्यवहार किया, वह तो सहजता का अनोखा उदाहरण है। उसने ना तो चोर को पकड़ा, न पिटवाया, बल्कि उससे सेवा ली और अपना पुत्र बना लिया। उसके पकड़े जाने पर उसने उसे उपदेश भी नहीं दिया। उसने इतना ही कहा → अब तुम्हारी मर्जी - चाहे चोरी करो या खेती। उसकी इस सहज भावना से चोर का हृदय परिवर्तित हो गया। उसने सदा के लिए चोरी छोड़ दी और खेती को अपना लिया।

ध. 'शिक्षा बच्चों का जन्मसिद्ध अधिकार है' - इस दिशा में लेखिका के प्रयासों का उल्लेख कीजिए।

उ०- लेखिका जब कर्नाटक के बागलकोट में थी तो अपने तथा अन्य दूसरे बच्चों की शिक्षा की ओर ध्यान देते हुए उन्होंने सबसे पहले कैथोलिक बिशप से प्राइमरी स्कूल को बनवाने में

PAGE NO.:
DATE: / /

आर्थिक सहायता माँगी किंतु वह सिर्फ क्रिश्चियन बच्चों के लिए स्कूल खोलना चाहते थे। बाद में लेखिका ने प्रण लिया कि वह खुद प्राइमरी स्कूल खोलेगी और कर्नाटक सरकार से उसे मान्यता भी दिलाएँगी और उनके मेहनती लोगों की मदद से यह प्रण पूरा हुआ। उनके तथा अन्य अफसरों के बच्चे उसी स्कूल में पढ़े।

7. पाठ के आधार पर लिखिए कि जीवन में कैसे इंसानों को अधिक श्रद्धा भाव से देखा जाता है?

उ० - प्रस्तुत पाठ के आधार पर यह कहा जा सकता है कि जो लोग कभी झूठ नहीं बोलते और सच का साथ देते हैं, जो किसी की बात को इधर-उधर नहीं करते अर्थात चुगलखोरी से दूर रहते हैं। जिनके इरादे मजबूत होते हैं जो हीन भावना से ग्रसित नहीं होते तथा जिनका व्यक्तित्व सरल, सहज एवं पारदर्शी होता है, उन्हें पूरा समाज श्रद्धा भाव से देखता है।

8. 'सच, अकेलेपन का मज़ा ही कुछ और है' - इस कथन के आधार पर लेखिका की बहन एवं लेखिका के व्यक्तित्व के बारे में अपने विचार

PAGE NO. :
DATE : / /

व्यक्त कीजिए।

उ० - लेखिका व उनकी बहन एकांत प्रिय स्वभाव की थीं। लेखिका व उनकी बहन के व्यक्तित्व का सबसे खूबसूरत पहलू था - वे दोनों जिद्दी स्वभाव की थीं परन्तु इस जिद्द से वे हमेशा सही कार्य को ही अंजाम दिया करती थे। लेखिका की जिद्द ने ही कर्नाटक में स्कूल खोलने के लिए प्रेरित किया था। वे दोनों स्वतंत्र विचारों वाले व्यक्तित्व की स्वामिनी थीं और इसी कारण जीवन में अपने उद्देश्यों को पानें में सदा आगे रहीं।